बिल्लियाँ कैसे बढ़ती हैं?

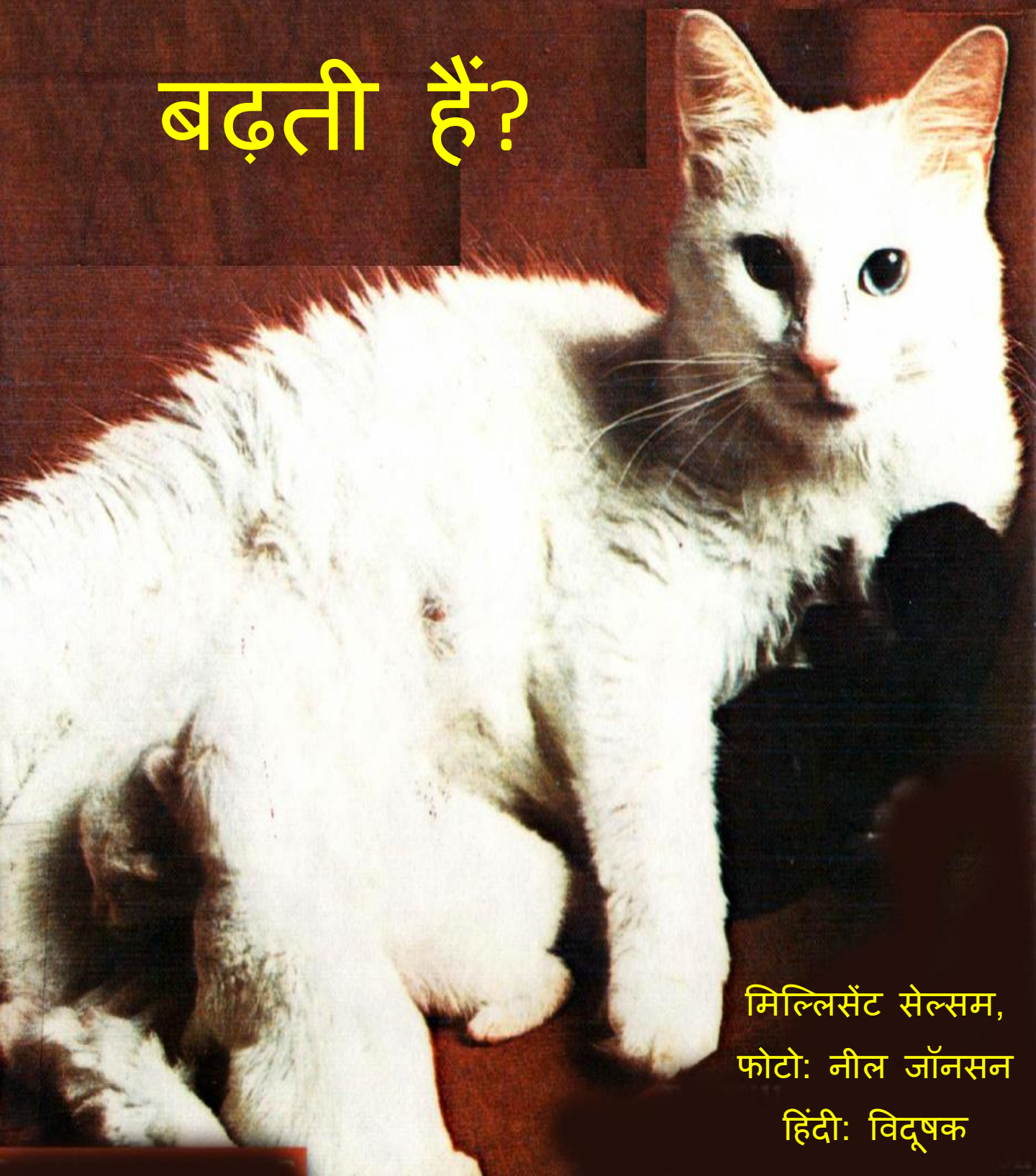

मिल्लिसेंट सेल्सम,
फोटो: नील जॉनसन
हिंदी: विदूषक

बिल्लियाँ कैसे बढ़ती हैं?

मिल्लिसेंट सेल्सम, फोटो: नील जॉनसन हिंदी: विदूषक

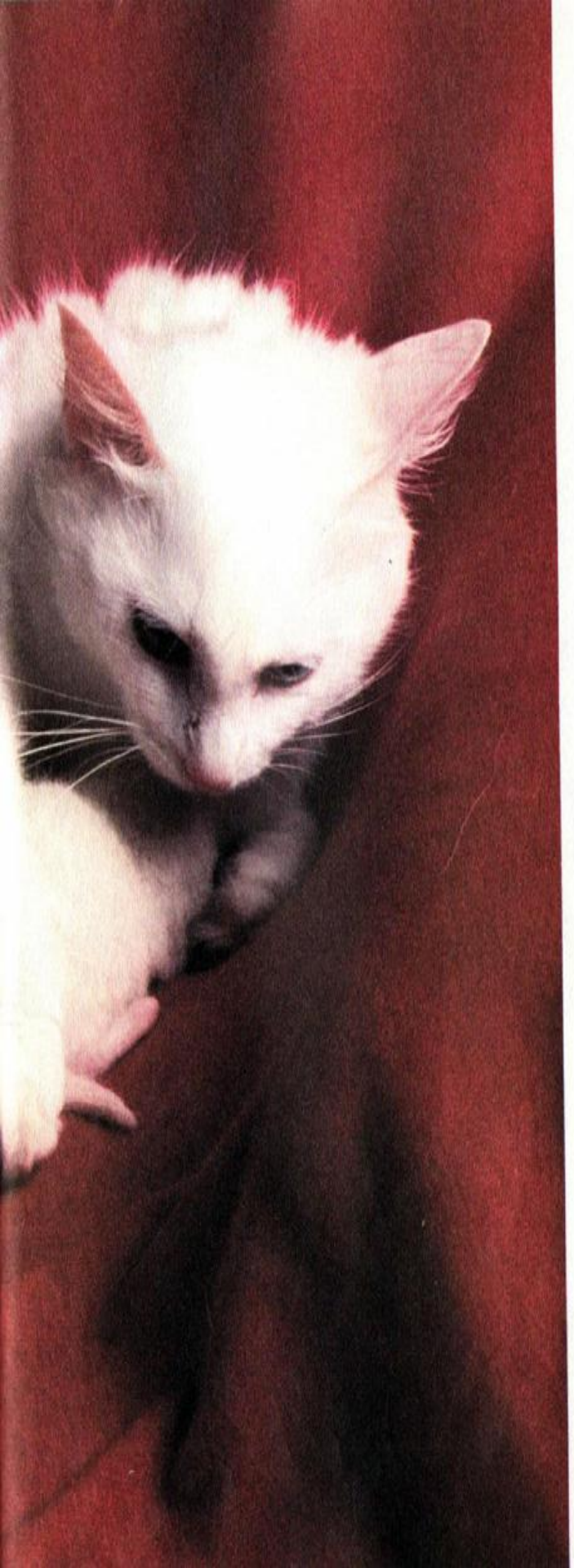

माँ बिल्ली ने
अभी-अभी, चार बच्चों
को जन्म दिया है.
वो अभी करवट के बल
लेटी है और बच्चों को
चाट रही है.

बिल्ली का हरेक बच्चा अभी छोटा है.
उनकी आँखें अभी बंद हैं, इसलिए वो देख नहीं सकते.
वो अभी भी सुन नहीं सकते क्योंकि उनके कान बंद हैं.
पर अभी भी बिल्ली के बच्चे सूंघ सकते हैं, और छूकर गर्मी महसूस कर सकते हैं.

हरेक बिल्ली का बच्चा अपनी माँ के गर्म शरीर की ओर घिसटने की कोशिश करता है.

उसके अगले पैर, धीरे-धीरे आगे को बढ़ते हैं.

वो साथ में पिछले पैरों को भी घसीटता है.

उसका सर बाएं-दाएँ हिलता है.

अंत में वो अपनी माँ के पास पहुँचता है.

फिर बिल्ली के बच्चे अपने मुंह और नाक से माँ बिल्ली के रोयेंदार शरीर को रगड़ते हैं.

बच्चे इसी तरह अपना मुंह रगड़ते रहते हैं.

अंत में उनका मुंह बिल्ली के चूचुक तक पहुँचता है.

फिर वो बिल्ली के चूचुक को अपने मुंह में डालकर उससे दूध चूसते हैं.

बिल्ली का हरेक बच्चा जन्म से एक घंटे के अन्दर दूध चूसने लगता है.

इन छोटे बच्चों को अपनी माँ की ज़रुरत है.

माँ उन्हें दूध पिलाती है.

माँ उन्हें गर्म रखती है.

माँ उन्हें सुरक्षित रखती है.

चार दिनों तक माँ बिल्ली अपने बच्चों के साथ लगभग पूरे समय रहती है.
हर दो घंटों के बाद माँ बिल्ली उठती है और फिर एक अंगड़ाई लेती है.
फिर वो खाने के लिए जाती है.
चौथे दिन के बाद, माँ बिल्ली ज्यादा बार उठती है.
जब बिल्ली खाने के लिए जाती है तब उसके बच्चे सोते हैं.
अक्सर बच्चे एक-दूसरे पर सोते हैं.
इस तरह बच्चे एक-दूसरे को गर्म रखते हैं.

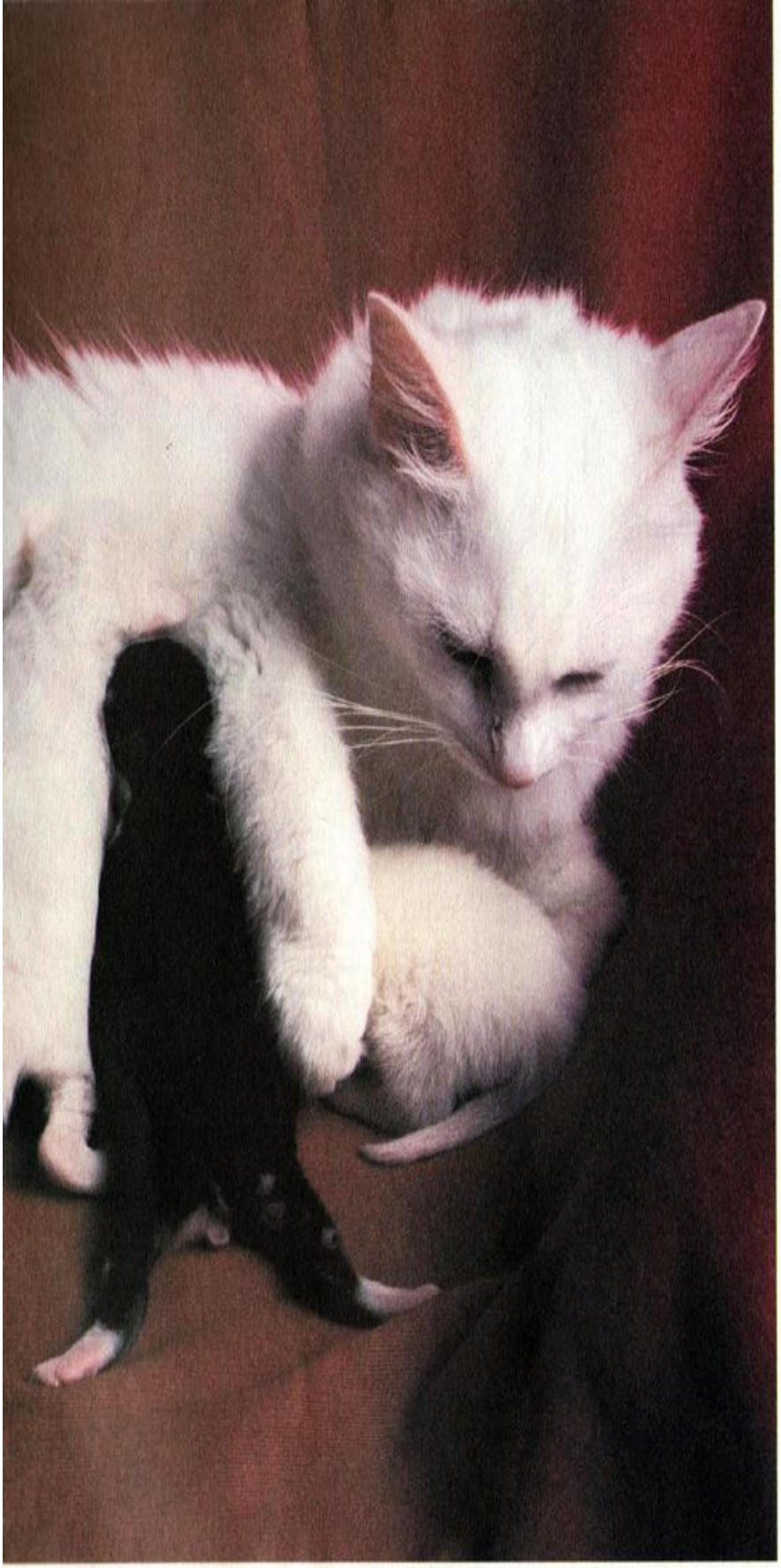

माँ बिल्ली वापिस
आकर सभी बच्चों
को चाटती है.
माँ के चाटने से
बच्चे जग जाते हैं.
फिर माँ बिल्ली, लेट
जाती है और बच्चे
उसका दूध पीते हैं.
अब तक हर बच्चा
दूध पीने के लिए
एक विशेष चूचुक
चुनता है.
अगर कोई उसे लेने
की कोशिश करे तो
बच्चा उस चूचुक को
कसकर पकड़ता है
और उसे नहीं छोड़ता
है.

जब बिल्ली के बच्चे, दो हफ्ते के होते हैं तो फिर वो अपनी आँखें खोलते हैं.
तब तक उनके कान भी खुल जाते हैं.

बिल्ली के बच्चे अब बड़े हो रहे हैं.
पैदाइश के समय से अब उनका वज़न दुगना हो जाता है.

बच्चे अभी भी घिसटते हैं.
अभी भी वे चल नहीं पाते.
पर अब वे पहले से ज्यादा
बेहतर देख और सुन पाते हैं.

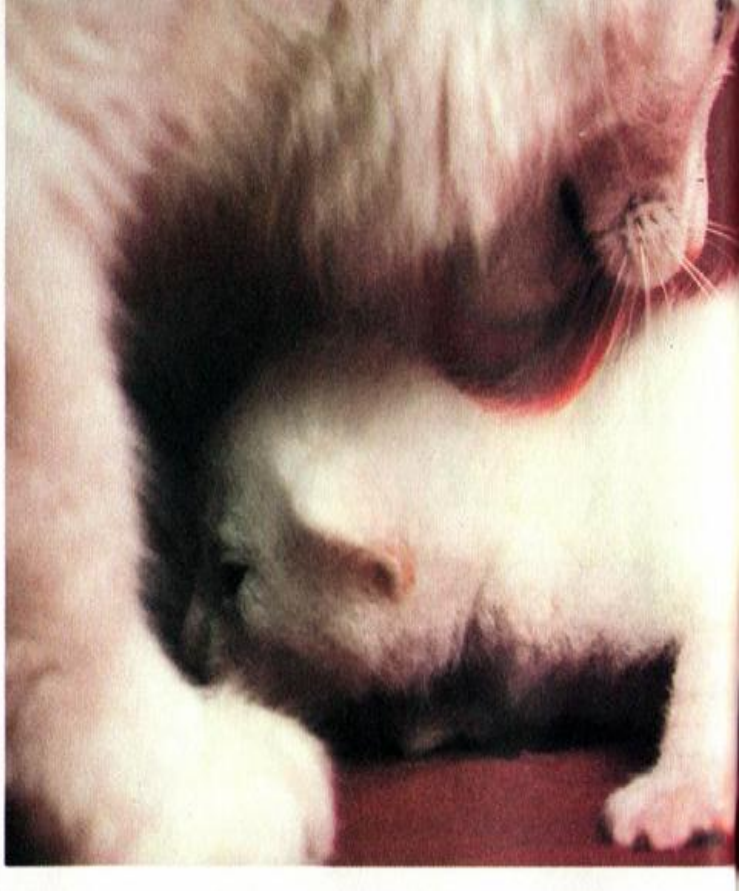

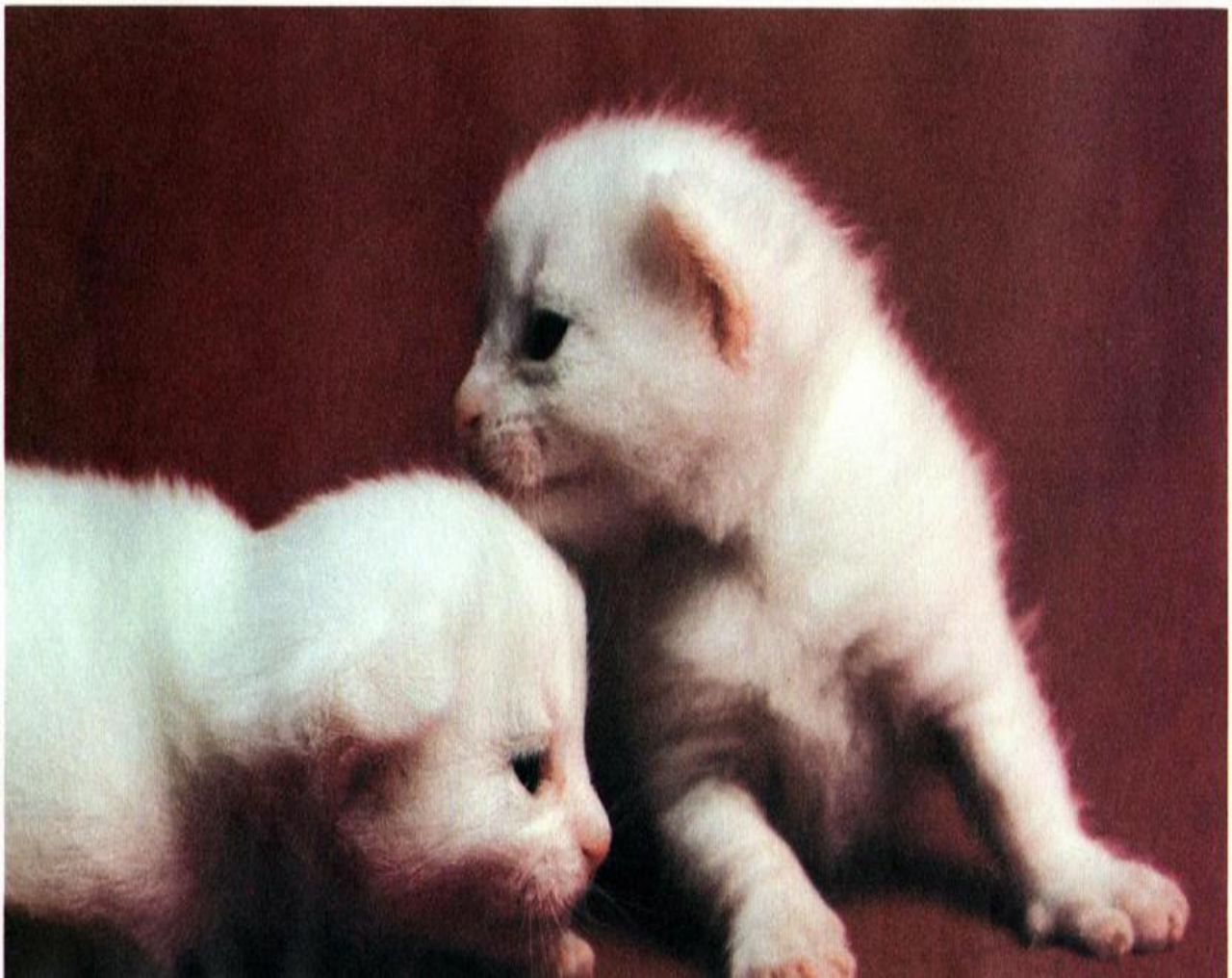

कभी कोई बिल्ली का बच्चा घिसटकर, अपनी माँ से दूर चला जाता है.

पर तब उसे फर्श ठंडा लगता है, फर्श की खुशबू भी अलग होती है.

तब बिल्ली का बच्चा रोता है.

माँ बिल्ली, रोने की आवाज़ सुनती है.

फिर वो जाकर बच्चे के गले को अपने मुंह से पकड़कर, उसे वापिस लाती है.

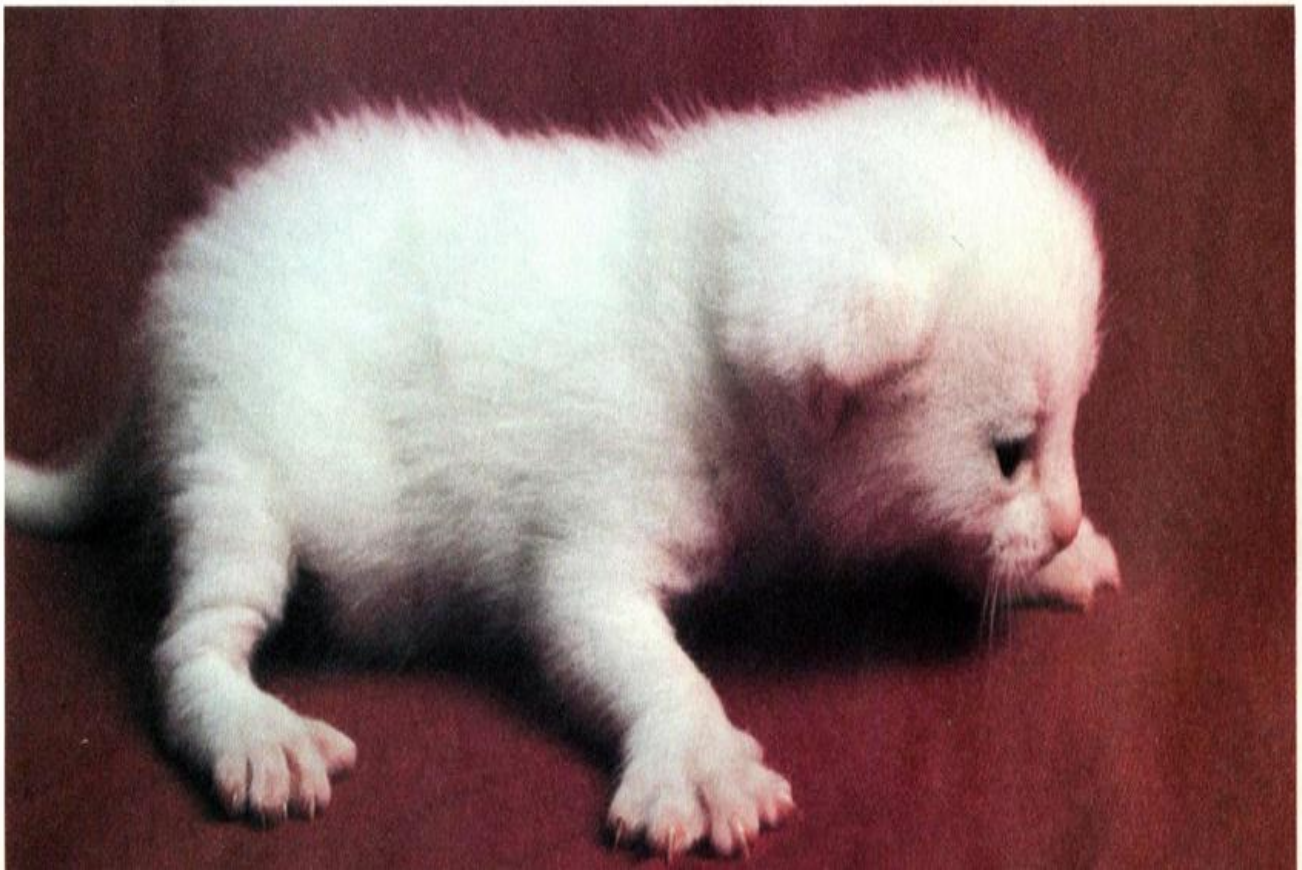

अब बिल्ली के बच्चे चार हफ्ते के हो गए हैं. अगर माँ उनके पास न आए तो भी बच्चे माँ के पास दूध पीने के लिए जा सकते हैं.

हर हफ्ते बच्चों के वज़न में, छह ओउंस (170-ग्राम) की बढ़त होती है.

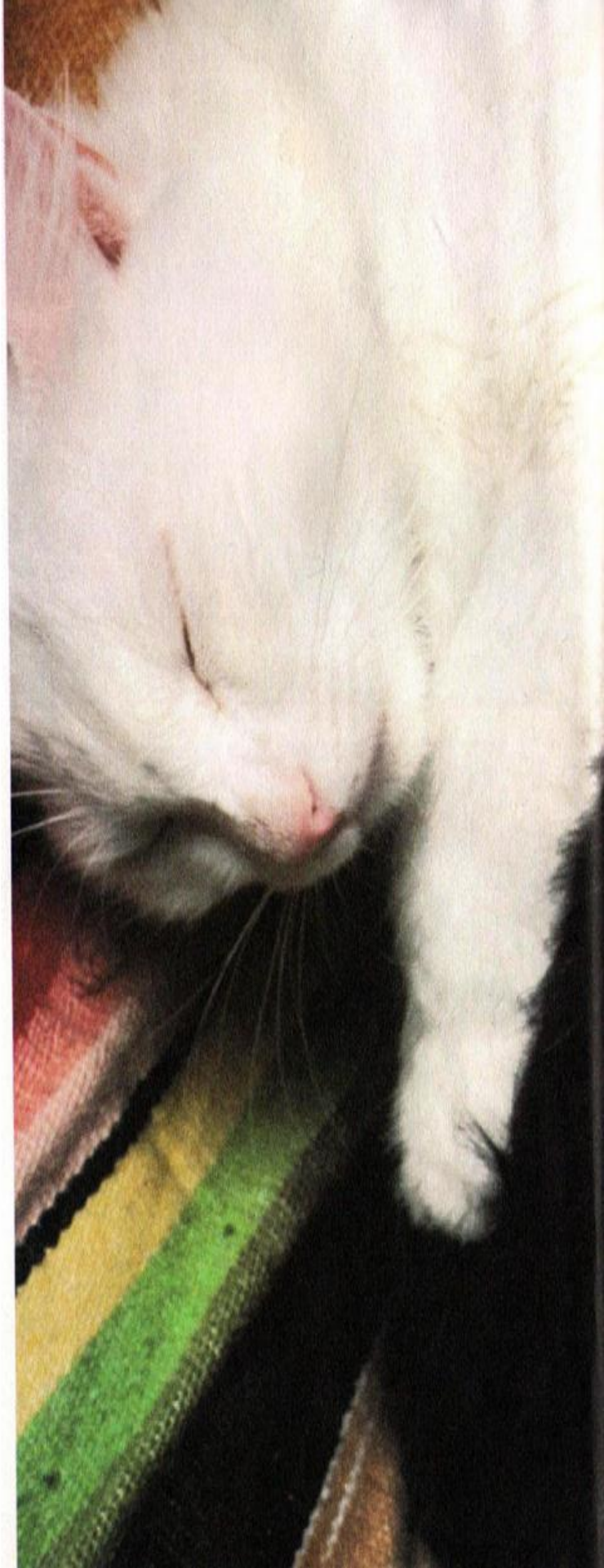

अब बिल्ली के बच्चे अपने पैरों पर खड़े होकर धीरे-धीरे चलते हैं. उनके पैर अभी भी लड़खड़ाते हैं. पर अब उन्हें काफी साफ़ दिखाई देता है.
वो अब ठीक तरह से सुन भी पाते हैं.

धीरे-धीरे बच्चों की माँ, अब उनके पास कम ही आती है.
पर अब छोटी बिल्लियाँ अपनी माँ के पीछे-पीछे घूम सकती हैं.
वो माँ को लिटाकर उसका दूध पी सकती हैं.
हरेक बच्चा अभी भी माँ के विशेष चूचुक से ही दूध पीता है.

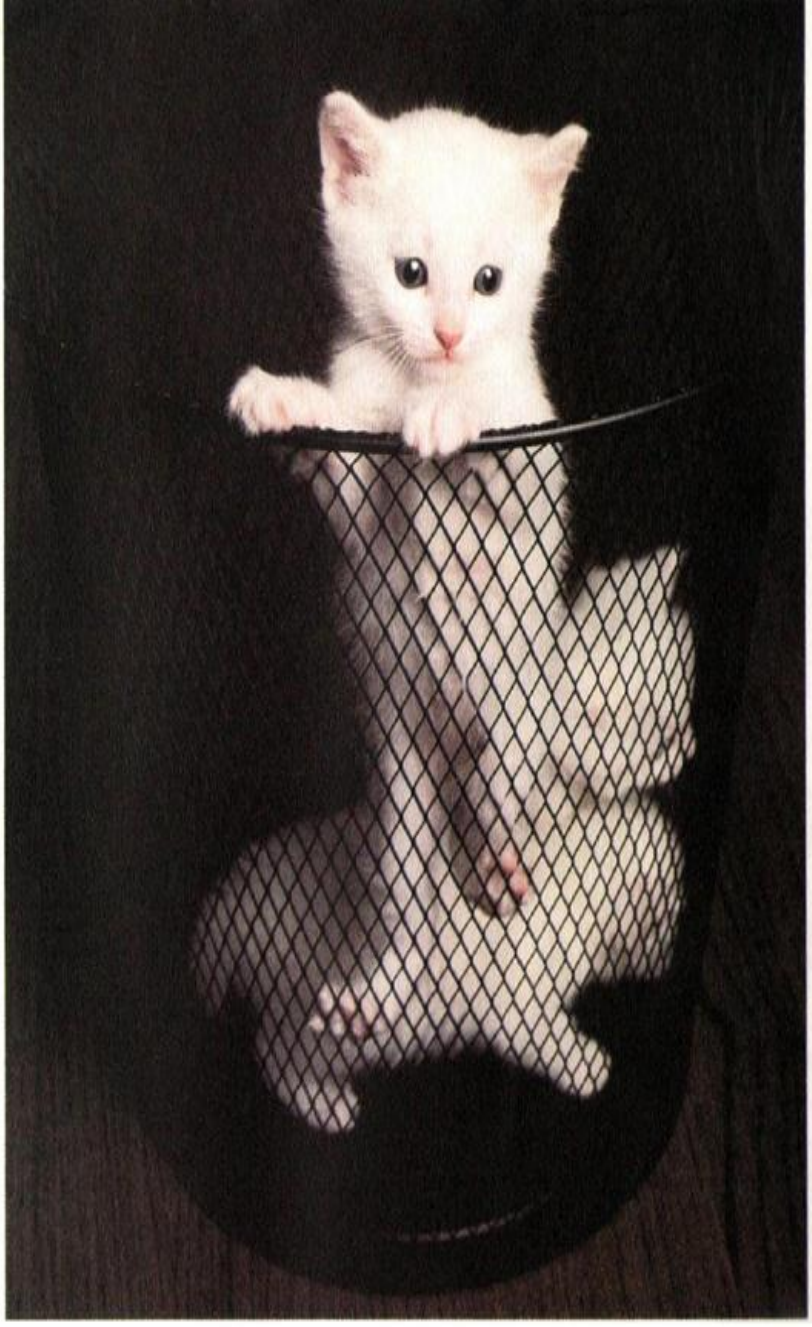

अब बिल्ली के बच्चे,
एक-दूसरे से खेलते हैं.
वे एक-दूसरे को चाटते हैं.
वो एक-दूसरे का पीछा करते हैं.
वे एक-दूसरे पर लोटते हैं.

उन्हें जो कुछ मिलता है
वे उससे खेलते हैं.

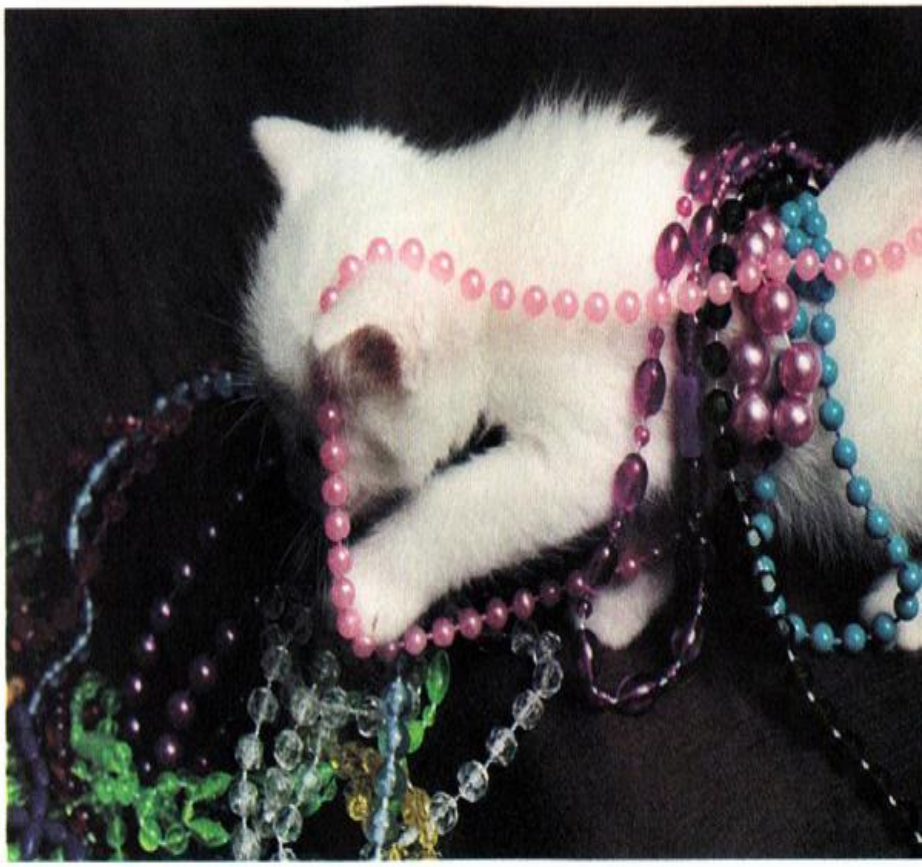

बच्चे अपनी माँ के पीछे-पीछे दौड़ते हैं.

वे अपनी माँ के ऊपर कूदते हैं.

वे माँ का मुंह चाटते हैं.

वे माँ की पूँछ को काटते हैं.

कभी-कभी जब खेल बेढंगा हो जाता है और बच्चे ज्यादा ही शरारत करते हैं, तो माँ बिल्ली, कूदकर अपने बच्चों दूर चली जाती है.

कभी वो एक ऊंचे स्टूल पर या फिर दीवार के किसी शेल्फ पर चढ़कर बैठ जाती है.
कभी-कभी माँ बिल्ली, अपने बच्चों को मारती भी है.

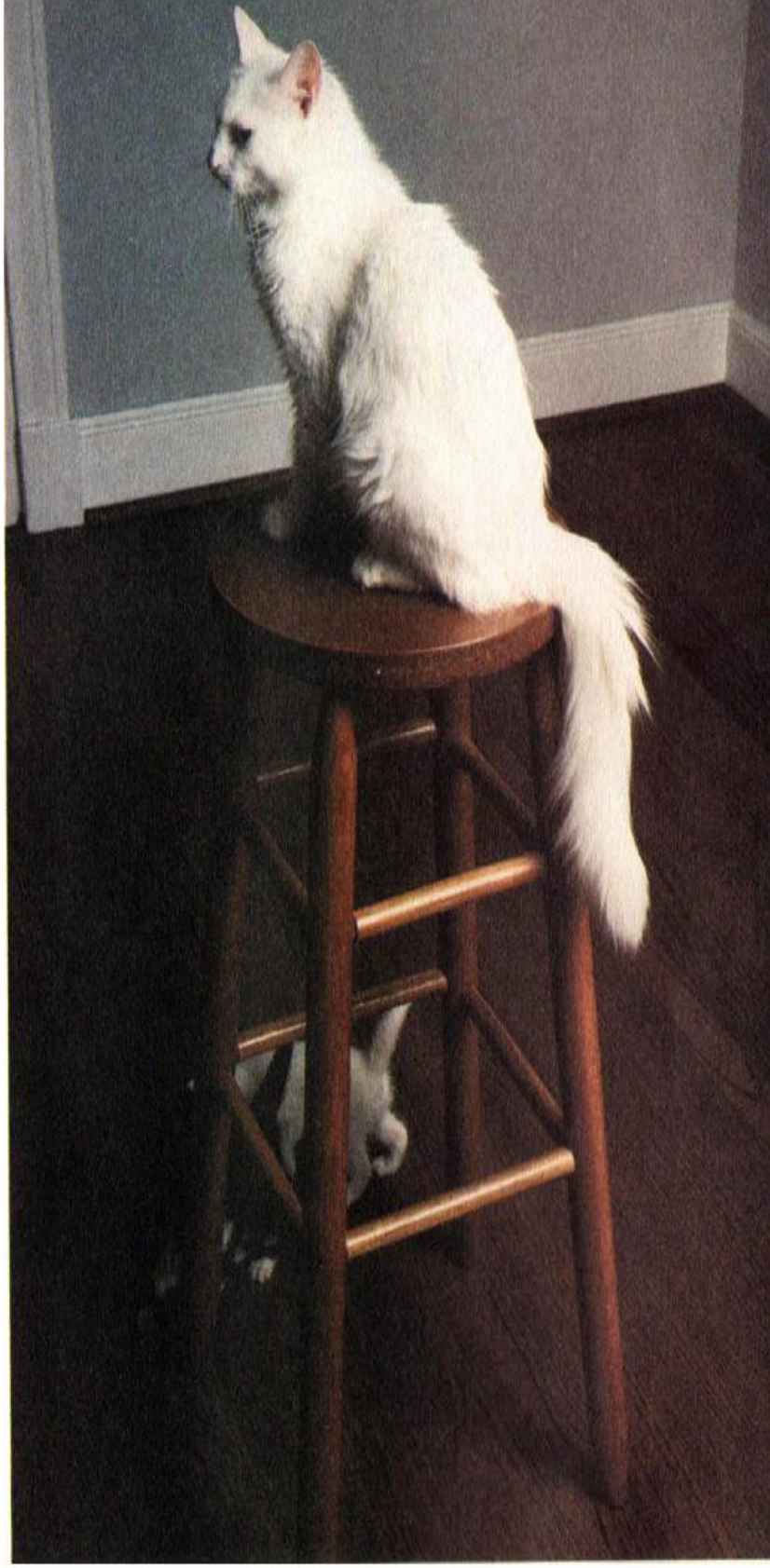

जब बिल्ली के बच्चे पांच हफ्ते के होते हैं तो
उन्हें अपनी माँ से कम ही दूध मिलता है.
अब वो कटोरे से दूध पी सकते हैं.

जब माँ खाने के लिए जाती है तो बच्चे भी उसके पीछे-पीछे जाते हैं. जिस बर्तन में खाना रखा होता है कभी-कभी वो उसमें अपना पैर रख देते हैं. कभी फर्श पर रखे खाने में वो अपना पैर रख देते हैं. खाने से सने पैर को, वे चाटते हैं. वो कितना स्वादिष्ट लगता है! बच्चे, माँ के मुंह पर लगे भोजन को चाटते और चखते हैं. इस तरह वे ठोस भोजन खाना सीखते हैं.

फार्म्स पर बिल्लियाँ खुद अपना भोजन खोजती हैं.
शुरू में माँ बिल्ली, अपने बच्चों के लिए किसी जानवर का शिकार करके लाती है.
इससे बच्चों को पता चलता है की भविष्य में उन्हें किस जानवर का शिकार करना होगा.
बाद में जब बिल्ली शिकार पर जाती है तो बच्चे भी उसके पीछे-पीछे जाते हैं.

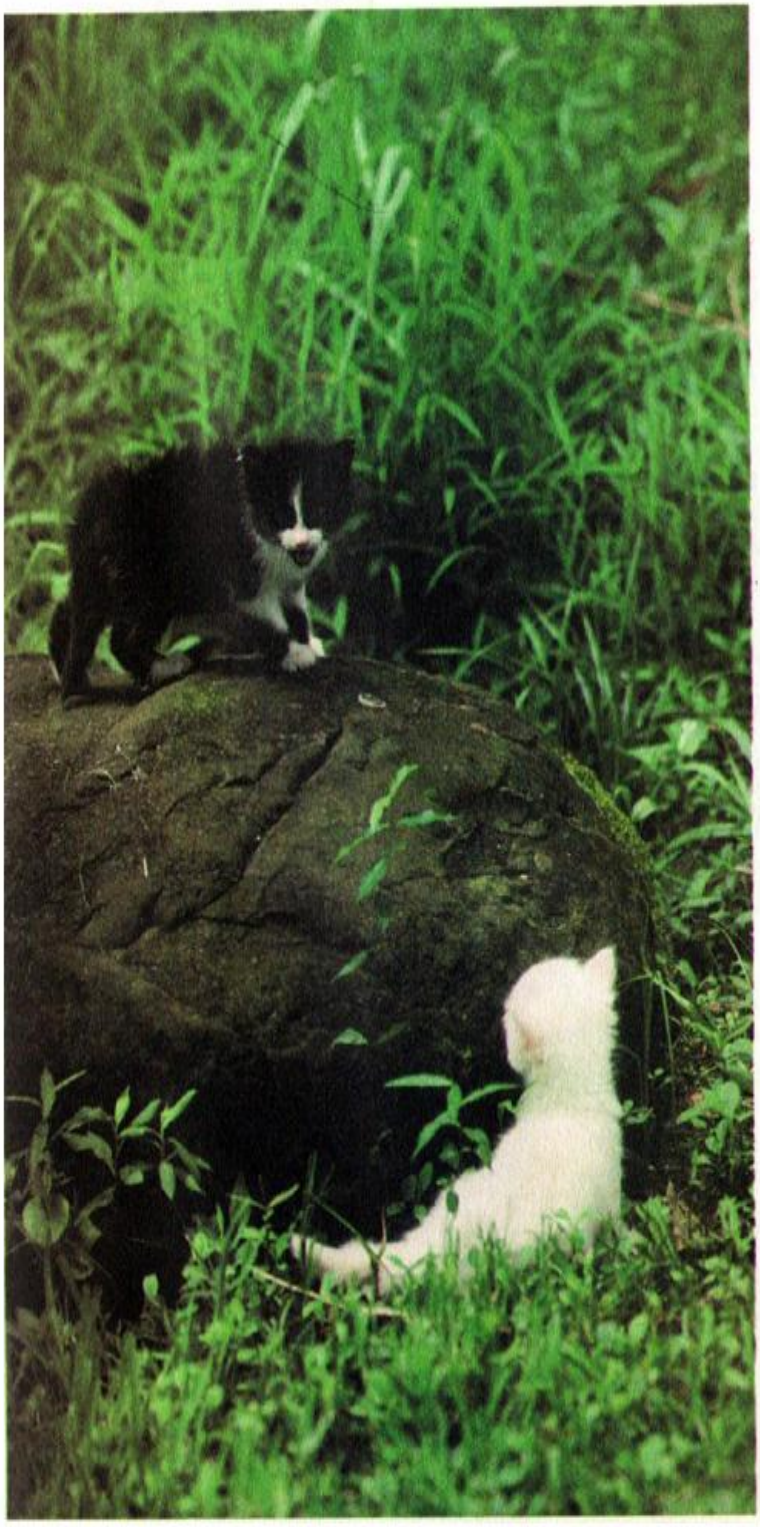

इस प्रकार बिल्ली के बच्चे छोटे जानवरों को, खासकर चूहों को मारना सीखते हैं. अब तक बिल्ली के बच्चों के दांत निकल आते हैं और वे अपने भोजन को चबा सकते हैं. शुरू में वे दांत “कच्चे दांत” होते हैं बिल्कुल मनुष्य के बच्चों की तरह. जब बिल्ली के बच्चे, छह महीने के होते हैं तब उनके “कच्चे दांत” गिर जाते हैं और उनकी जगह “पक्के दांत” आ जाते हैं.

जब बिल्ली के बच्चे आठ महीने के होते हैं तो वे माँ का दूध पीना बंद कर देते हैं. अब वे ठोस भोजन खा सकते हैं. अब वे शिकार करना, ऊपर चढ़ना, छलांग मारना, दौड़ना और चुपचाप घास पर चलकर चूहे पकड़ना सीख चुके होते हैं.

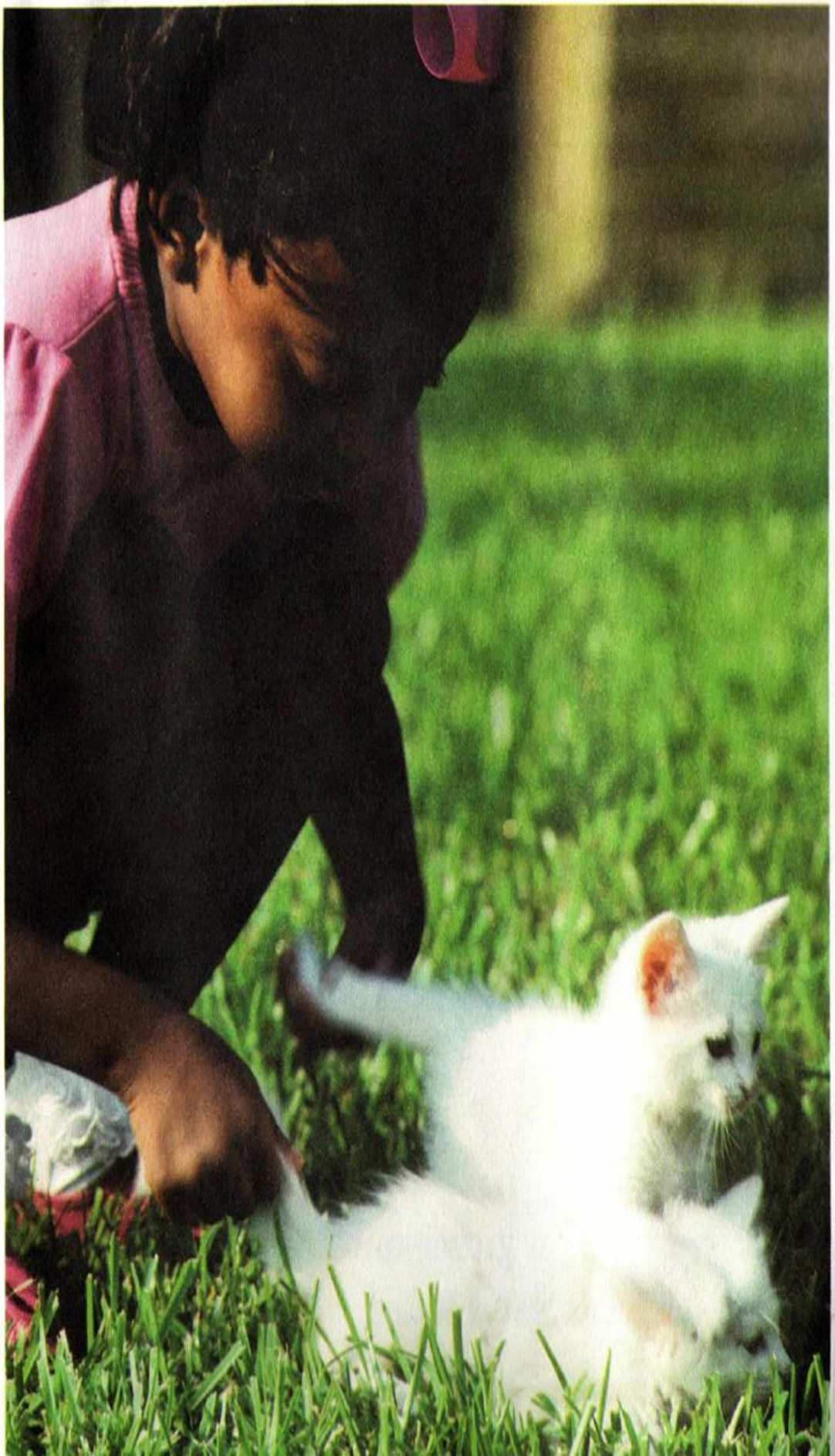

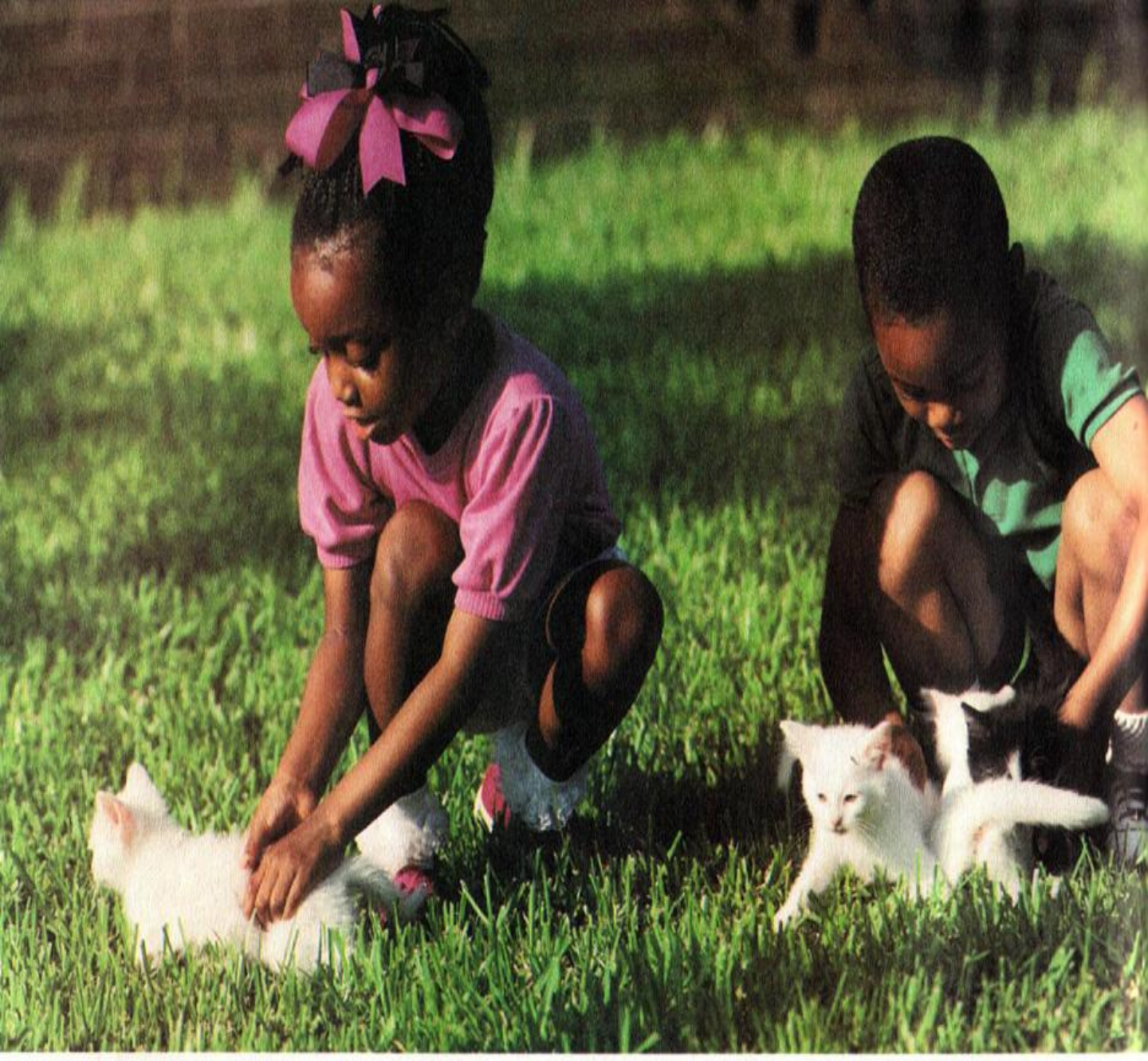

अब वे, उन सभी कामों को कर सकते हैं जो कोई बड़ी बिल्ली करती है.

बिल्ली का नया बच्चा घर लाने का, यह बिल्कुल ठीक समय होगा.